Pratika (Indore), 29th June 2025, Page- 12

रैंकिंग ढलान पर : 34 देशों के साथ 118 इंटरनेशनल एमओयू और बढ़ती रिसर्च क्वालिटी के बावजूद चार साल में 160 रैंक नीचे आया संस्थान, अंतरराष्ट्रीय मानकों पर लगातार हो रहा कमजोर

एम्प्लॉयमेंट, इंटरनेशनल अपील और अकादमिक छवि में पिछड़ा IIT इंदौर

पत्रिका सुरभि भावसार
patrika.com

इंदौर. चार साल पहले तक वैश्विक तकनीकी संस्थानों की कतार में आगे खड़ा आइआइटी इंदौर अब लगातार पिछड़ता जा रहा है। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में संस्थान की रैंकिंग 556 पर पहुंच गई, जबकि यह 2023 में 396 थी। यानी चार साल में 160 स्थानों की गिरावट आई है। यह स्थिति कई अहम संकेतकों में लगातार कमजोर हो रहे प्रदर्शन की वजह से आई है। हैरानी की बात है कि आइआइटी इंदौर के पास 34 देशों के साथ 118 इंटरनेशनल एमओयू और तीन हजार विद्यार्थियों पर 220 फैकल्टी हैं, फिर भी उसका प्रदर्शन अंतरराष्ट्रीय मानकों पर टिक नहीं पा रहा है।

इंडस्ट्री लिंकेज व इंटरनेशनल सहभागिता पर हो फोकस

आइआइटी इंदौर जैसे संस्थानों को अब क्यूएस जैसे वैश्विक बेंचमार्क को ध्यान में रखते हुए नीति-निर्माण और शैक्षणिक प्रबंधन करना होगा। सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर या रिसर्च स्कोर नहीं, बल्कि एम्प्लॉयमेंट आउटकम्स, इंडस्ट्री लिंकएज और इंटरनेशनल सहभागिता पर भी फोकस जरूरी है। यदि इंदौर को वैश्विक शिक्षा हब के रूप में उभारना है, तो प्रमुख संस्थानों को प्लेसमेंट, फैकल्टी अपस्किलिंग और इंटरनेशनल नेटवर्किंग को मजबूती देना जरूरी है। **-जयंतीलाल भंडारी,** वरिष्ठ अर्थशास्त्री और शिक्षा विशेषज्ञ

रैंकिंग गिरने के प्रमुख कारण

एम्प्लॉयमेंट आउटकम्स: विद्यार्थियों की नौकरी और कॅरियर ग्रोथ पर सवाल

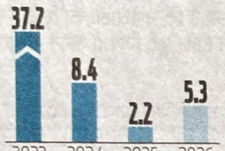

37.2 से 5.3% तक की गिरावट बताती है कि आइआइटी इंदौर से ग्रेजुएट होने वाले विद्यार्थियों को वैश्विक कंपनियों में नौकरी की संभावना घट रही है। इसका कारण इंडस्ट्री कनेक्शन की कमी, इंटरनेशनल इंटर्नशिप्स का अभाव माना जा रहा है।

एंप्लॉयर रिपुटेशन: इंडस्ट्री में संस्थान की पहचान कमजोर

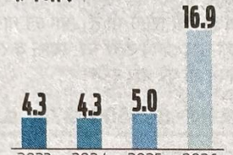

बॉम्बे, दिल्ली, खड़गपुर आइआइटी 60-80 स्कोर तक पहुंचते हैं, आइआइटी इंदौर का स्कोर 2026 में 16.9 ही है। इसका कारण कॉर्पोरेट सेक्टर के साथ प्रभावशाली नेटवर्किंग और रोजगारपरक ट्रेनिंग का अभाव है।

इंटरनेशनल स्टूडेंट रेशो विविधता में कमी

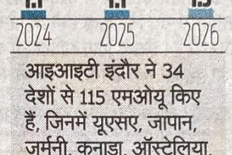

आइआइटी इंदौर ने 34 देशों से 115 एमओयू किए हैं, जिनमें यूएसए, जापान, जर्मनी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, लंदन जैसे देश शामिल हैं, फिर भी विदेशी स्टूडेंट्स आकर्षित नहीं हो रहे। इंटरनेशनल मार्केटिंग, कोर्सेज की ग्लोबल यूनिवर्सिटी के अनुरूप ब्रांडिंग न होना, स्कॉलरशिप व सपोर्ट सिस्टम की कमी जैसे कारण हो सकते हैं।

इंटरनेशनल फैकल्टी रेशो ग्लोबल शिक्षकों की भागीदारी कम

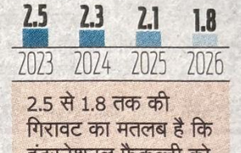

2.5 से 1.8 तक की गिरावट का मतलब है कि इंटरनेशनल फैकल्टी को संस्थान में आमंत्रित करने या रिटेन करने की कोशिशें पर्याप्त नहीं रही। एमओयू तो मौजूद हैं, लेकिन एक्टिव फैकल्टी एक्सचेंज या गेस्ट लैक्चर प्रोग्राम्स की संख्या सीमित है।

फैकल्टी स्टूडेंट रेशो विद्यार्थी और शिक्षक अनुपात में संतुलन नहीं

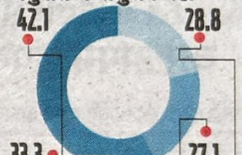

220 से ज्यादा फैकल्टी और तीन हजार से ज्यादा विद्यार्थी होने के बावजूद स्कोर में गिरावट का मतलब साफ है कि शिक्षकों पर वर्कलोड बढ़ा है या शैक्षणिक गुणवत्ता और गाइडेंस में गैप बना हुआ है।

सिर्फ रिसर्च साइटेशन में रहा मजबूत

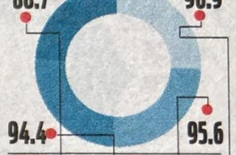

आइआइटी इंदौर का साइटेशन प्रति फैकल्टी स्कोर बढ़ा है, जो साबित करता है कि संस्थान में रिसर्च की गुणवत्ता बेहतर है। उसके पेपर्स को इंटरनेशनल कम्यूनिटी में पढ़ा व सराहा जा रहा है। अकेले शोध, रैंकिंग को ऊपर नहीं ले जा सका।